# भारतीय परिदृश्य में जॉन रॉल्स के न्याय सिद्धांत की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

के सामाजिक विज्ञान संकाय के, राजनीति विज्ञान विभाग में

पी.एच-डी. उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध सार


शोधार्थी

प्रिया कुमारी दाँ

पंजीयन संख्या :-..............................

द्वारा

विश्वविद्यालय विभाग : राजनीति विज्ञान (बी. बै. ए. के. यू. धनबाद)

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. अमूल्य एस. सुमन बेक

सहायक प्राध्यापक विश्वविद्यालय विभाग राजनीति विज्ञान

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय , धनबाद


जनवरी, 2024

## परिचय

राजनीतिक दर्शन के महत्वपूर्ण अवधारणाओं में सें न्याय एक विशिष्ट अवधारणा है। न्याय एक आदर्श मूल्य है, जिसके आधार पर एक सभ्य समाज एवं राज्य का निर्माण होता है। न्याय का क्षेत्र अति व्यापक है क्योंकि न्याय के विभिन्न स्वरूप है जिनमें न्याय के सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक सभी का समावेशित रूप होता है। न्याय की आवश्यकता तभी होती है, जब समाज में अन्याय, सामाजिक विषमताएँ एवं समस्याएँ विद्यमान होती है। समाज में व्याप्त न्याय की समस्याएँ क्रमशः विभिन्न वर्गों, व्यक्तियों एवं समूहों के मध्य विविध अवसरों, लाभों, सेवाओं एवं वस्तुओं आदि को वितरित करने की रही है। अनेक विद्वानों एवं विचारको ने समाज में विद्यमान सामाजिक असमानताओं, समस्याओं एवं मुद्दों पर आधारित गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन कर समाधान के रूप में न्याय सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। उन्हीं प्रमुख विचारकों में सें एक जॉन रॉल्स है। रॉल्स के अनुसार समाज की मुख्य समस्या प्राथमिक वस्तुओं के न्याय पूर्ण वितरण की समस्या है। प्राथमिक वस्तुओं से अभिप्राय है – अधिकार व स्वतंत्रताएँ, शक्तियाँ व अवसर, आय व संपदा तथा आत्म सम्मान के साधन। रॉल्स द्वारा इन समस्याओं के निदान के रूप में समान वितरण के सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया। समकालीन उदारवादी चिंतन के अंतर्गत प्रगति बनाम न्याय का विवाद उत्पन्न हुआ तो हेयक ने प्रगति का पक्ष लिया था, वही रॉल्स ने प्रगति के साथ न्याय का भी साथ दिया। रॉल्स ने अपनी पुस्तक थ्योरी ऑफ जस्टिस के अंतर्गत यह तर्क देते हुए कहा था कि एक उत्तम समाज के अंदर बहुत सारे सद्‌गुण अपेक्षित होते हैं और उसमें न्याय का सिद्धांत अत्यधिक महत्वपूर्ण है। न्याय एक उत्तम समाज की आवश्यक शर्त है परंतु पर्याप्त नहीं है, इसके अलावा भी बहुत सारे नैतिक गुणों की एक समाज में प्रधानता होती है।

भारत एक कल्याणकारी राज्य होने के बावजूद भी समाज में न्याय संबंधित समस्याओं से जूझ रहा है। समाज में न्याय को स्थापित करने के लिए भारतीय चिंतकों, विद्वानों, राजनीतिज्ञों, समाज–सुधारको, बुद्धिजीवियों जैसे– राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, भीमराव अम्बेडकर, विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण इत्यादि अनेको द्वारा महत्वपूर्ण सिद्धांतो, विचारों एवं आवश्यक शर्तों का उल्लेख किया गया है। परन्तु फिर भी वर्तमान समय के समाज में न्याय संबंधित समस्याओं एवं विषमताओं को देखा जा सकता है। समाज में न्याय के अभाव में एक उन्नत एवं विकसित समाज की परिकल्पना करना असंभव प्रतीत होगा। न्याय संबंधी विचारकों में सबसें प्रमुख विचारक के रूप में जॉन रॉल्स का नाम सर्वप्रथम आता है। उन्होंने समाज में न्याय प्राप्ति के जिन परिस्थितियों एवं पहलुओं का उल्लेख किया है, उनका प्रतिबिंबित रूप भारतीय समाज में दिखाई देता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन कार्य में इस प्रतिबिंबित रूप को स्पष्टता सें रेखांकित करने एवं साथ ही उनके न्याय सिद्धांतों के आधार पर भारतीय सामाजिक विषमताओं को नियंत्रित करने का प्रयास किये जाएंगे तथा इसकी वर्तमान प्रासंगिकता का मूल्यांकन इस शोध का मुख्य उद्देश्य के रूप में है।

**साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा**

प्रस्तावित अनुसंधान कार्य भारतीय परिदृश्य में जॉन रॉल्स के न्याय के सिद्धांतों की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन के निम्नलिखित शोध प्रबंधो, पुस्तकों एवं लेखों की समीक्षा की गई

- **रॉल्स, ज. (1971). ए थ्योरी ऑफ जस्टिस. लंदनः हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस कैम्ब्रिज.**

रॉल्स ने अपने पुस्तक में न्याय के सिद्धांत को परिभाषित करते हुए यह बताया है कि एक श्रेष्ठ समाज में न्याय को कैसे स्थापित किया जा सकता है, उसकी क्या प्रक्रिया होनी चाहिए, किस तरह सें सभी लोग उस प्रक्रिया को अपना ले। इन सभी पहलुओं का विस्तृत उल्लेख किये है साथ ही इसमें उन्होंनें उपयोगितावाद की कड़ी आलोचना की है। वे उपयोगितावादी तर्क अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख का खण्डन करते हुए, समाज में सुख के मात्रात्मक तत्व की अपेक्षा गुणात्मक तत्व को महत्व देते है। इसी विचार के आधार पर न्याय उचितता के रूप में सिद्धांत का प्रतिपादन किये, इसलिए रॉल्स की प्रमुख रचना ए थ्योरी ऑफ जस्टिस न्याय स्थापित करने के महत्वपूर्ण पहलुओं को समझने में सहायता प्रदान करती है।[1]

- **रॉल्स, ज. (1993). पॉलिटिकल लिबरलिज्म. न्यूयॉर्कः कोलम्बिया यूनिवसिर्टी प्रेस.**

जॉन रॉल्स ने इस पुस्तक में अपनी विश्व–विख्यात रचना ए थ्योरी ऑफ जस्टिस में उल्लेखित न्याय सिद्धांत के परिवर्तित स्वरूप की व्याख्या की है। अपने अध्ययन तथा अनुभवों के आधार पर रॉल्स यह विवेचन करते हैं कि परिस्थितियों के अनुरूप न्याय सिद्धांतों का भी पुनः विवेचन किया जाना आवश्यक है। पुस्तक में न्याय सिद्धांत में उल्लेखित न्याय उचितता के रूप में का सुस्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। रॉल्स ने न्याय सिद्धांत के व्यावहारात्मक पहलुओं को भी उजागर किया है। इस पुस्तक में ए थ्योरी ऑफ जस्टिस की आलोचनाओं का उत्तर रॉल्स ने दिया है। यह पुस्तक रॉल्स के न्याय सिद्धांत को समझने के लिए उपयुक्त है।[2]

- **फ्रीमैन, स. (2007). रॉल्स सैमुअल फ्रीमैन. लंदन और न्यूयॉर्कः राउटलेज**.

इस पुस्तक में रॉल्स के सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन के मुख्य धारणाओं का विवेचन किया गया है। लेखक ने रॉल्स के जीवन वृतांत के साथ उसके प्रमुख रचनाओं का भी अध्ययन सूक्ष्म रूप में किया है। लेखक द्वारा रॉल्स के मुख्य कृतियों में सें न्याय के सिद्धांत, पॉलिटिकल लिबरलिज्म तथा द लॉ ऑफ पीपुल्स आदि का मूल्यांकन किया गया है। लेखक द्वारा विस्तृत अध्ययन के कारण पुस्तक में दस अध्यायों में रॉल्स के सिद्धांतों का प्रस्तुतीकरण स्पष्टतम रूप में किया गया है।[3]

• **लेनिंग, प. ब. (2009), जॉन रॉल्सः एन इन्ट्रोडक्शन कैम्ब्रिज न्यूयॉर्कः यूनिवर्सिटी प्रेस.**

प्रस्तुत पुस्तक में रॉल्स के जीवन परिचय का उल्लेख किया गया। लेखक ने रॉल्स को 20वी सदी के सबसे प्रभावशाली राजनीतिज्ञों एंव दार्शनिकों में सें एक के रूप में क्यों स्वीकार किया जाता है इस बात को रेखांकित किया है। पुस्तक में कैसे रॉल्स के न्याय सिद्धांत ने सरकार को प्रभावित किया और सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रों में क्या भूमिका निभाई इसको स्पष्ट करने का प्रयास किया है। लेखक द्वारा रॉल्स के अवधारणाओं का वर्तमान समय में क्या महत्व है इस प्रश्न पर भी व्यापक चर्चा की गई है।[4]

• **पॉग , थ. (2007). जॉन रॉल्सः हिज लाइफ एण्ड योरी ऑफ जस्टिस. लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.**

पुस्तक में लेखक ने रॉल्स के आधारभूत धारणाओं एवं विचारों का उल्लेख किया है। इस में रॉल्स के न्याय के सिद्धांत के मूलभूत विचारो को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में विभिन्न विचारको द्वारा रॉल्स के न्याय सिद्धांत की आलोचनाओं का अध्ययन किया गया है जिससे रॉल्स के न्याय के सिद्धांत के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही पक्षो द्वारा रॉल्स के न्याय सिद्धांत को विस्तृत रूप में समझा जा सके। लेखक ने उन परिस्थितियों का वर्णन किया है जिन परिस्थितियों के कारण रॉल्स के न्याय सिद्धांत की उत्पत्ति हुई।[5]

• **दाधीच, प. न. (2021). जॉन रॉल्स का न्याय का सिद्धांत जयपुरः वाडर प्रकाशन.**

यह हिन्दी माध्यम की पुस्तक है जो रॉल्स के न्याय सिद्धांत की पूर्ण व्याख्या करता है। इस पुस्तक में रॉल्स के ए थ्योरी ऑफ जस्टिस 1971, पॉलिटिकल लिबरलिज्म 1993, द लॉ ऑफ पीपुल्स 1999 एवं अन्य लेखो को भी व्यापक रूप में व्याख्या की है। इस पुस्तक द्वारा रॉल्स के न्याय सिद्धांत को हिन्दी में सहज रूप में समझा जा सकता है।[6]

• **उपाध्याय, अ. क. (1999). जॉन रॉल्सः कन्सेप्ट ऑफ जस्टिस जपपुर एण्ड दिल्लीः रावत पब्लिकेशन,**

लेखक ने रॉल्स के न्याय सिद्धांत संबंधी विचारो पर शोध कार्य पूर्व में सम्पन्न कर उसे पुस्तक में रूपांतरित किया है। इस पुस्तक में रॉल्स के विचारों एंव सिद्धांतों को 6 अध्यायों में व्यापक रूप सें उल्लेख किये है। लेखक ने यूनानी दार्शनिक प्लेटों सें लेकर वर्तमान के न्याय सिद्धांतों का भी गहन अध्ययन किये है। लेखक द्वारा रॉल्स के न्याय उचितता के रूप में के सिद्धांत का सरलतम व्याख्या की है, साथ ही न्याय के अन्य सिद्धांतों जैसे समानता का सिद्धांत एंव भेदमूलक सिद्धांत को भी स्पष्टता सें प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। लेखन ने यह स्वीकार किया है कि रॉल्स उपयोगितावाद के विरोध में न्याय उचितता के रूप में के सिद्धांत को प्रतिपादित किया है।[7]

• **चौब, क. न. (2022). न्याय का सिद्धांत जॉन रॉल्स प्रस्तावना एंव अनुवाद,**

इस पुस्तक में रॉल्स के न्याय सिद्धांतों का उल्लेख सूक्ष्म एवं व्यापक रूप में किया गया है साथ ही रॉल्स द्वारा रचित विविध रचनाओं एंव लेखों का भी वर्णन किया गया है। रॉल्स के न्याय सिद्धांतो के विस्तृत रूप को स्पष्ट करने का अथक प्रयास किया गया है। इसमें सरलतम रूप में रॉल्स के ही सिद्धांत का अनुवादित स्वरूप प्रस्तुत किया गया है।[8]

• **सिंह, श. सामाजिक न्याय की अवधारणाः डॉ भीमराव अम्बेडकर व जॉन रॉल्स का तुलनात्मक अध्ययन**

इस शोध प्रबंध के अन्तर्गत रॉल्स एवं अम्बेड़कर के सामाजिक न्याय की अवधारणाओं को व्यापक रुप में विश्लेषित किया गया है। दोनों ही विचारको के विचारो एंव दृष्टिकोणों में कुछ समानताएँ और असमताएँ पायी गई है। न्याय स्थापना में इन दोनों महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञों के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं आवश्यक शर्तों का उल्लेख विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया गया है साथ ही रॉल्स के न्याय सिद्धातों को स्पष्टता सें समझाया गया है और भारतीय परिदृश्य में डॉ अम्बेड़कर के सामाजिक न्याय संबंधी अवधारणाओं को भी सुव्यवस्थित रूप सें प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है।[9]

उपर्युक्त समस्त साहित्य समीक्षा सें जॉन रॉल्स के न्याय सिद्धांत की विस्तृत जानकारी एवं ज्ञान प्राप्त होती हैं परन्तु इनमें सें किसी भी पुस्तक या शोध प्रबंध में भारतीय परिदृश्य में जॉन रॉल्स के न्याय के सिद्धांत की विवेचना नही की गई है। अतः इस कारणवश इस विषय को शोध कार्य के लिए चयनित किया गया है।

## शोध समस्या

जॉन रॉल्स के न्याय सिद्धांत पर कार्य पूर्व में किये जा चुके हैं। उनमें से कुछ शोध कार्य हैं जैसे– जॉन रॉल्स के न्याय सिद्धांत का सुक्ष्म एवं गहन अध्ययन, रॉल्स एवं विविध विचारकों के न्याय संबंधी दृष्टिकोणों का तुलनात्मक, साथ ही भारतीय सामाजिक न्याय पर आधारित भी अनेक शोध कार्य हो चुके है, परन्तु भारतीय समाज में न्याय की स्थापना की दिशा में जॉन रॉल्स के न्याय सिद्धांतों पर विश्लेषण नही किया गया है, इसी शोध खाई को प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा पाटने का प्रयास किया जाएगा।

## शोध के उद्देश्य

• न्याय का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

• भारतीय समाज में न्याय प्राप्ति के समक्ष आने वाली समस्याओं एंव कठिनाईयों को चिन्हित करना।

• जॉन रॉल्स के न्याय संबंधी अवधारणाओं का विश्लेषण करना।

• भारत के संदर्भ में जॉन रॉल्स के न्याय सिद्धांत के महत्व को ज्ञात करना।

• भारतीय समाज के सापेक्ष में जॉन रॉल्स के न्याय सिद्धांतों के सकारात्मक एंव नकारात्मक पक्षों का मूल्यांकन करना।

• भारतीय परिप्रेक्ष्य में जॉन रॉल्स के न्याय के सिद्धांत की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

## शोध परिकल्पना

### मुख्य परिकल्पना

• भारत में न्याय की स्थापना के लिए जॉन रॉल्स का न्याय सिद्धांत उपयोगी है, इसलिए रॉल्स का न्याय सिद्धांत भारत के लिए प्रासंगिक है।

### उप परिकल्पना

• जॉन रॉल्स का विभेदी सिद्धांत भारत के लिए व्यावहारिक है।

• रॉल्स द्वारा समाज में न्याय प्राप्ति के लिए जिन अवधारणाओं का उल्लेख किया गया है वे भारत में विद्यमान है।

• रॉल्स का वितरणात्मक न्याय सिद्धांत भारतीय समाज में न्याय को स्थापित करता है।

## शोध पद्धति एंव प्रकार

शोध की अध्ययन पद्धति का चयन शोध कार्य की प्रकृति एवं विषय वस्तु के आधार पर किया गया है। इसलिए प्रस्तावित शोध के अध्ययन पद्धति के रूप में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धतियों को प्रयोग में लाया जाएगा ।

## डेटा के संग्रह उपकरण

अध्ययन कार्य में प्रयुक्त होने वाले स्त्रोतों को मुख्य रूप सें दो वर्गो में बांटा जा सकता है :-

1. प्राथमिक स्त्रोत – प्राथमिक स्त्रोत के अन्तर्गत अवलोकन, प्रश्नावली, एवं अनुसूची को उपयोग में लाया जाएगा ।

2. द्वितीयक स्रोत – द्वितीयक स्रोत के रूप में सामाजिक न्याय अध्येताओं द्वारा लिखित पुस्तकों एवं अध्ययनों, शोध प्रबंधों, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों एवं जर्नल आदि को भी उपयोग में लाया जाएगा ।

## अध्ययन का महत्व

प्रस्तावित अध्ययन समाज में न्याय संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने में सहायक होगा। इसके अन्तर्गत समाज में न्याय की भूमिका, आवश्यकता एवं समाज में न्याय प्राप्ति के समक्ष आने वाली समस्याओं, बाधाओं एवं विषमताओं के विभिन्न पहलुओं को समझने में उपयोगी होगा। रॉल्स के न्याय सिद्धांत के आधार पर भारतीय समाज में न्याय प्राप्ति का एक भिन्न दृष्टिकोण मिलेगा। भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत न्याय संबंधित दृष्टिकोण से भिन्न पाश्चात्य दृष्टिकोण के आधार पर न्याय की प्राप्ति का एक अभिन्न विचार समाज को प्रदान करना। प्रस्तुत शोध कार्य भारतीय समाज में न्याय की स्थापना में सहायक सिद्ध होगा।

प्रस्तावित अध्ययन भारतीय समाज के भावी कल्याणकारी योजनाओं के नीति निर्माण में योगदान प्रदान करेगा। भारतीय समाज में व्याप्त न्यायिक समस्याओं को नियंत्रित करने में यह शोध कार्य उपयोगी सिद्ध होगा। यह अध्ययन भावी शोधार्थियों एवं शोध के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा इस शोध द्वारा एक न्यायिक सिद्धांत का पूर्णविलोकन कर वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता की जाँच के आधार पर न्यायिक समस्याओ के समाधाण के रूप मे सहायता प्रदान करेगा।

## शोध की सीमाएँ

कोई भी सिद्धांत किसी व्यक्ति विशेष की अपनी विचारधारा से उत्पन्न रचना होती है। किसी के विचारों का अध्ययन कार्य एक जटिल एवं चुनौतीपूर्ण कार्य होता है, इसमें विचारों के मूल भाव के परिवर्तित होने की संभावना होती है। रॉल्स की ही कृतियों द्वारा उनके विचारों को स्पष्टतम उनके रूप में समझा जा सकता है परन्तु रॉल्स द्वारा रचित तीन ही पुस्तके है जो एक शोध सीमा के रूप में देखी जा सकती है। अतः इस प्रकार इस अध्ययन कार्य में इन बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। शोध सीमाओं के रूप में विचाराधात्मक बाधाएँ एवं अध्ययन सामग्री के आभाव को देखा जा सकता है।

## संभावित अध्यायीकरण

**परिचय -** साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा, अध्ययन का महत्व, शोध के उद्देश्यय, परिकल्पना, शोध प्रविधि

**• प्रथम अध्याय : न्याय की अवधारणा**

इस अध्याय में विविध विचारकों द्वारा वर्णित न्याय की परिभाषाओं एंव अर्थो के आधार पर न्याय क्या है, न्याय के स्वरूप, प्रकार, समाज में उसकी भूमिका एवं न्याय की अनिवार्यता आदि के विवेचन द्वारा न्याय की व्यापक अवधारणा को स्पष्ट किया जाएगा।

**• द्वितीय अध्याय : जॉन रॉल्स का न्याय सिद्धांत**

अध्याय में जॉन रॉल्स के न्याय संबंधित अवधारणाओं एंव दृष्टिकोणों का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा साथ ही रॉल्स द्वारा समाज में सामाजिक अन्याय एवं विषमताओं को दूर करने के लिए जिन न्याय सिद्धांतो का उल्लेख किया गया है उनकी स्पष्टतम व्याख्या की जाएगी।

**• तृतीय अध्याय : भारत की न्याय व्यवस्था**

किसी भी समाज की नीव न्याय होती है। समाज में न्याय का सुव्यस्थित रूप समाज को मजबूती प्रदान करती है। समाज में न्याय व्यवस्था की सुसंरचना सभ्य समाज एवं राज्य का निर्माण करती है। अतः इस अध्याय में भारतीय समाज की न्याय व्यवस्था के स्वरूप को विश्लेषित किया जाएगा ।

**• चतुर्थ अध्याय : भारतीय विचारकों के न्याय की अवधारणा एवं जॉन रॉल्स**

इस अध्याय के अंतर्गत भारतीय विचारकों के न्यायिक अवधारणाओं के विश्लेषित रूप को दर्शाया जाएगा। भारतीय विचारकों के न्याय संबंधी अवधारणाओं एवं जॉन रॉल्स के न्याय सिद्धांत के बीच समानताओं और असमानताओं के सम्मिलित रूप को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाएगा है।

**• पंचम अध्याय : भारतीय समाज में रॉल्स के न्याय सिद्धांत की प्रासंगिकता**

जॉन रॉल्स के न्याय सिद्धांत के अन्तर्गत जिन परिस्थितियों, अवस्थाओं एंव आवश्यक पहलुओ का वर्णन किया गया है, वे समाज में न्याय की स्थापना के लिए अनिवार्य है। भारतीय समाज में रॉल्स के न्याय सिद्धांत की प्रतिछाया दिखाई पड़ती है, इसलिए इस अध्याय में रॉल्स के न्याय सिद्धांत के उन पक्षो का वर्णन किया जाएगा जो भारतीय समाज में निहित है एवं उसके न्याय व्यवस्था के लिए आवश्यक है।

**निष्कर्ष**

## संदर्भ


1. रॉल्स, ज. (1971) ,ए थ्योरी ऑफ जस्टिस लंदनः हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस कैम्ब्रिज,
2. रॉल्स, ज. (1993). पॉलिटिकल लिबरलिज्म न्यूयार्कः कोलम्बिया यूनिवसिर्टी प्रेस.
3. फ्रीमैन, स. (2007). रॉल्स सैमुअल फ्रीमैन, लंदन और न्यूयार्कः राउटलेज
4. लेनिंग, प. ब. (2009), जॉन रॉल्सः एन इन्ट्रोडक्शन न्यूपार्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. पाँग, थ. (2007) जॉन रॉल्सः हिज लाइफ एण्ड योरी ऑफ जस्टिस लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. दाधीच, प. न. (2021). जॉन रॉल्स का न्याय का सिद्धांत जयपुरः वाडर प्रकाशन.
7. उपाध्याय, अ. क. (1999). जॉन रॉल्सः कन्सेप्ट ऑफ जस्टिस जपपुर एण्ड दिल्लीः रावत पब्लिकेशन,
8. चौबे, क. न. (2022). न्याय का सिद्धांत जॉन रॉल्स प्रस्तावना एवं अनुवाद
9. सिंह, श. सामाजिक न्याय की अवधारणाः डॉ भीमराव अम्बेडकर व जॉन रॉल्स का तुलनात्मक अध्ययन

## ग्रंथसूची

- **पुस्तकें**


➢ दॉधीच, नरेश, (2003), जॉन रॉल्स का न्याय का सिद्धान्त, अविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, 807 व्यास बिल्डिंग, चौड़ा रास्ता, जयपुर.

➢ गुर्जर, लीलाराम, (1997), बीसवीं सदी के विचारक, मनोहर प्रकाशन, दिल्ली.

➢ सेन, अमर्त्य, (2014), न्याय का स्वरूप, राजपाल एण्ड सन्स, द्वितीय आवृत्ति, दिल्ली, 2014.

➢ पूरणमल, (1996), मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और भारत का संविधान, अग्रवाल पब्लिकेशन.

➢ एडम्स, मौरियन और ली, ऐनी बेल, (2016), टीचिंग फॉर डायवर्सिटी एंड सोशल जस्टिस, रूटलेज.

➢ आहूजा, राम, (2020), सोशल प्रॉब्लम्स इन इंडिया (चौथा एडिशन), रावत पब्लिकेशन, जयपुर.

➢ एलन, सी.के., (1995), एस्पेक्ट्स ऑफ सोशल जस्टिस, स्टीफंस, लंदन.

➢ ब्रहम, आर. एल., (2012), सोशल जस्टिस, स्प्रिंगर साइंस एंड बिजनेस मीडिया, यू.के.

➢ सिबिल, के. वी., (2019), सोशल जस्टिस, इंटरडिसिप्लिनरी इंक्वायरिस फ्रॉम इंडिया, टेलर एंड फ्रांसिस, रूटलेज.

➢ देसाई, डी. ए., (एडिटर), (1998), सोशल जस्टिस : ए डायलॉग, रावत पब्लिकेशन, जयपुर.

➢ डायोनिगी, फिलिपो एण्ड क्लेडोस्टी, जेरेमी, (2017), एन एनालासिस ऑफ जॉन रॉल्स थियोरी ऑफ जस्टिस, सी. आर. सी. प्रेस, अमेरिका.

➢ दुबे, एम. पी., (2017), सोशल जस्टिसः डिस्ट्रीब्यूशन प्रिंसिपल्स एंड बियॉन्ड, रावत पब्लिकेशन, जयपुर.

➢ एडमंडसन, विलियम ए., (2017), जॉन रॉल्स रेटिसेंट सोशलिस्ट, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क.

- फ्रीमैन, सैमुअल, (2002), द कैम्ब्रिज कम्पेनियन टू रॉल्स, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क.
- ग्रोनबाम, मेलिसा, (2014), जॉन रॉल्सः थियोरी ऑफ जस्टिस, जस्टिस एज फेयरनेस, ग्रीन वर्ली, म्यूनिख, जर्मनी.
- कन्नाबिरन, कल्पना, (2013), टूल्स ऑफ जस्टिसः नॉन डिस्क्रिमिनेशन एंड द इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन, रूटलेज.
- खन्ना, एल.एम., (2014), इंडियन सोशल जस्टिसः ए केस फॉर रिव्यू, पार्ट्रिज, न्यू दिल्ली.
- मैंडल, जॉन (2009), जॉन रॉल्सः ए थ्योरी ऑफ जस्टिसः एन इंट्रोडक्शन, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क.
- मैन्सेल, अलेक्जेंडर, (2017), (एडिटर), थियोरी ऑफ जस्टिस, रूटलेज.
- पटनायक, एम.जी., (2015), सोशल जस्टिस एंड क्राइम इन इंडिया, सब्लाईम पब्लिकेशंस, जयपुर, भारत.
- नोजिक, रॉबर्ट, (1974), एनार्की, स्टेट एंड यूटोपिया, बेसिल ब्लैकवेल.
- पोग्गे, थॉमस, (2007), जॉन रॉल्सः हिज लाइफ एंड थ्योरी ऑफ जस्टिस, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- पुनियानी, राम, (2013), क्वेस्ट फॉर सोशल जस्टिस, अर्थ पब्लिकेशंस, मुंबई
- रॉल्स, जॉन, (1985) जस्टिस ऐज फेयरनेसः पॉलिटिकल नॉट मेटाफिजिकल, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क.
- रॉल्स, जॉन, (2001) जस्टिस ऐज फेयरनेसः ए रिस्टेटमेंट, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन.
- रीश, माइकल, (2013), सोशल पॉलिसी एंड सोशल जस्टिस, सेज पब्लिकेशंस, न्यू दिल्ली.
- साडे, एलियन एंड वाल्टर डी. ग्रुटर (एडिटर), (2015), द कांसेप्ट ऑफ जस्टिस एंड इक्विलिटीः ऑन द डिस्प्यूट बिटवीन जॉन रॉल्स एंड गेराल्ड कोहेन, जीएमबीएच एंड कंपनी.

- सब्बाघ, क्लारा और मैनफ्रेड शिमट, (2016), हैंडबुक ऑफ सोशल जस्टिस थ्योरी एंड रिसर्च, स्प्रिंगर.
- समदार, रनबीर, (2009), स्टेट ऑफ जस्टिस इन इंडिया : इश्यू ऑफ सोशल जस्टिस, सेज पब्लिकेशंस, न्यू दिल्ली.
- स्टीन, जाचरी, (2016), सोशल जस्टिस एंड एजुकेशन मेजरमेंटः जॉन रॉल्स द हिस्ट्री ऑफ टेस्टिंग एंड द फ्यूचर ऑफ एजुकेशनब रूटलेज.
- टेलर, हेलेन, (2018),सोशल जस्टिस इन कंटेंपरेरी हाउसिंगः एप्लिंग रॉल्स डिफरेंस प्रिंसिपल, रूटलेज.
- टोंस, जॉन, (2021), जॉन रॉल्स एंड एनवायरमेंटल जस्टिस : एम्पलिमेंटिंग ए सस्टेनेबल एंड सोशली जस्ट फ्यूचर, राज पब्लिकेशंस.
- वत्सला, प्रत्युष, (2015), इक्विलिटी एंड सोशल जस्टिस : इश्यू एंड कंसर्न, अटलांटिक पब्लिशर एंड डिस्टीब्यूटर.
- वर्मा, जे.एस. (2021),न्यू डाइमेंशन ऑफ जस्टिस, यूनिवर्सल लॉ पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली.
- वाल्जर, माइकल, (1983) स्फेयर्स ऑफ जस्टिस, बेसिक बुक.
- यादव, सुषमा और प्रकाश सिंह, (2015), अंबेडकर ऑन सोशल जस्टिसः पॉलिटिकल एंड सोशियो–इकोनॉमिक लैंडस्केप, डी. के. एजेंसियां, न्यू दिल्ली.

- **शोध – पत्र एवं पत्रिकाएँ**

- अशोक सम्राट, आशीष कुमार, (जनवरी–मार्च, 2016), सामाजिक न्याय की अवधारणा एवं आदर्श समाज, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की दृष्टि में एक विश्लेषण, रिसर्च फ्रन्ट, वाल्यूम 1. न.1. बीजिंग, पेज नं 31–36.
- एमडूर, रॉबर्ट (2014), रॉल्स का न्याय सिद्धान्त, शोधार्थी, अंक–02. विकासशील समाज अध्ययनपीठ, नई दिल्ली.

- गजेन्द्र, कुमार निखिल, केशवचन्द्र (2020), जॉन रॉल्स का न्याय सिद्धान्त और भारत का संविधान तुलनात्मक अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, वाल्यूम–06, ईसू–05.
- कुलकर्णी, मंगेश, (2014), जॉन रोल्स के न्याय सिद्धांत की विचारधारा मीमांसा, शोधार्थी, अंक–02, विकास समाज अध्ययन पीठ, नई दिल्ली.
- महावर, कुमार विमल (2019), न्याय के ऐतिहासिक एवं सामाजिक आयाम, रिसर्च रिइनफोर्समेण्ट, वाल्यूम–06, ईसू–02.
- कुमार अवधेश, (मार्च, 2016) पाश्चात्य तथा भारतीय सामाजिक चिन्तकों का सामाजिक न्याय सम्बन्धी विचार, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्प्लिनरी एजुकेशन एण्ड रिसर्च, वाल्यूम 1. अंक 1. गुप्ता पब्लिकेशन, नई दिल्ली. पृ. सं. 8–11.
- मिश्रा, अनुराधा, (2016), सामाजिक न्याय महात्मा गाँधी एवं भीमराव अम्बेडकर तुलनात्मक विवेचन, इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी, वाल्यूम–07, ईसू–06.
- सिंह. सुरेन्द्र बहादुर, (2015) सामाजिक न्याय की अवधारणा सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक विश्लेषण, राधा कमल मुखर्जीः चिन्तन परम्परा, वर्ष 17, अंक 1, भवानी प्रकाशन, नई दिल्ली, जनवरी–जून, पृ. सं. 1–40.
- उपाध्याय अशोक कुमार, (2014), जॉन रोल्स का राजनीतिक दर्शन, शोधार्थी, अंक–02, उन्नत समाज अध्ययन पीठ, नई दिल्ली.
- भोंसले, लक्ष्मी सयाजिरव राजे, (2021), जस्टिस फॉर ऑल : जॉन रॉल्स एंड इट्स रिलेवेंस इन इंडियन ज्यूडिशियल सिस्टम , जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस , वॉल्यूम 09 इश्यू 03.
- कैंपबेल, टी.डी., (अक्टूबर–दिसंबर, 1972), द कॉन्सेप्ट ऑफ जस्टिस (रॉल्स), पॉलिटिकल क्वार्टरली, वॉल्यूम 43, नंबर– 4, सेज जर्नल्स, पेज नंबर– 510–512.
- चिबुइकेम, निकोलस ओगम, (2017), एन इनसाइट इनटू नोशन ऑफ सोशल जस्टिस फॉलोइंग प्लेटो एंड रॉल्स, इंटरनैटिनल जर्नल ऑफ एडवांसेज इन फिलॉसफी, वॉल्यूम– 1, नंबर–2, पेज नंबर– 25–30.

- दत्ता, संपूर्ण, (2017), रॉल्स थ्योरी ऑफ जस्टिसः एन एनालिसिस, आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, वॉल्यूम – 22, इश्य – 4, अप्रैल.
- क्रेग, लियोन एच., (मार्च, 1975), कॉन्ट्रा कॉन्ट्रैक्टः ए ब्रीफ अगेंस्ट जॉन रॉल्स, थ्योरी ऑफ जस्टिस, कैनेडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, वॉल्यूम– 1 नंबर–1, पेज नंबर– 63–81.
- मांझी, राजु और चतुर्वेदी, सारांश, (2016), कंटेंपरेरी इश्यू इन लॉ एंड सोसाइटी, आध्या प्रकाशन, अहमदाबाद.
- नाम, एच.एच., जोस्ट, जे.टी. और फेल्डमैन, एस., (नवंबर, 2017), द न्यूरोबायोलॉजी ऑफ फेयरनेस एंड सोशल जस्टिसः एन इंट्रोडक्शन, सोशल जस्टिस रिसर्च, वॉल्यूम–30, इश्यू–4, स्प्रिंगर, अमेरिका, पेज नंबर –289–299.
- मैकाबे, हेलेन, (सितंबर अक्टूबर, 2012), जॉन रॉल्स और जस्टिस, फिलॉसफी नाउः ए मैगजीन ऑफ आइडियाज, वॉल्यूम –92, पेज नंबर– 19–21.
- एलिजा, ओकोन जॉन, (सितंबर, 2014), ए क्रिटिक ऑफ जॉन रॉल्स सोशल जस्टिस थ्योरीएंड द फेट ऑफ नाइजीरिया पॉलिटिक्स इन द 21 सेंचुरी एंड बियॉन्ड, जर्नल ऑफ लॉ, पॉलिसी एंड ग्लोबलाइजेशन, वॉल्यूम 28, आईआईएसटीई, पेज नंबर– 12–20.
- कालरा, कुश और बारुपाल, प्रियंका, (अप्रैल, 2013),इंडियन कांस्टीट्यूशन एंड द राईट टू सोशल जस्टिस, वर्ल्ड फोकस, दिल्ली.
- हो, मुन चान, (जनवरी, 2005), रॉल्स थ्योरी ऑफ जस्टिसः ए नेचुरलिस्टिक इवोल्यूशन, जर्नल ऑफ मेडिसिन एंड फिलॉसफी, वॉल्यूम– 30, नंबर 5, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पेज नंबर– 449–465.
- रंजीप, आई.जी.ई और हेरोल्ड, एगारशिम, (2010), रॉल्स जस्टिस थ्योरी एंड इट्स रिलेशंस टू द कॉन्सेप्ट ऑफ मैरिट गुड्स, द यूरोपियन जर्नल ऑफ हिस्ट्री ऑफ इकोनॉमिक थॉट, वॉल्यूम– 17.
- उकांगा, लैम्बर्ट, (2018), जॉन–रॉल्स पॉलिटिकल मोरैलिटी का एक अध्ययन, रिसर्चगेट.